

[illegible]



(सम्भृत १५) २ धनहित्रिया आगमश्रया आसं
नसियाया त दडायाग दडाप्रदतया त सिद्धाय
रुचिकनभूगयाउरकन धनप्रस धनकादि च
सिद्धरूपमश्वन गस्ति समुवयन त्रितायादाडा न
पूजायाश्रया समस्त गानेक विद्वितायाक
पुत्रानमिष्वा पत्रमश्वनीयागसिद्धनशका एतान
श्रवाया मत्रमश्वनया त सिद्धनशका नहनीश्रया

राया त आसनशकं नत्रसिप्रमात्रया त सिद्धनशका
नाकश्रया निष्कश्रका हनया

(सम्भृत १६) ६ अवलकृष्ट २ धनहित्रिया दाकसिद्ध
या कया त मिता ग सुलिदवयाक आदाडा दाडा
भक्तिपूजायादा चन्द्रविम्ब सूर्यविम्ब दानवि
दडायाग आसगश्र १ कुमालिया त आसगश्र १
पत्र ३ भवपूजा भक्ति यश्रया दा पूजा क

(नमो ब्रह्माय ॥ अंगमद्वय निष्ठा श्रवण दूतवक्रक
चक्रपतिगनाउ मलु लंग अंघि किन्नर अंघि गंजनर
अंघि पञ्चभान ॥ कम सुवन मग पंचगव पाण धनिधम
ताधून काउ ॥ गुन मागा उपाध्याहा आसनस विष्णु वर्क पूजा
नरु गुन मलु ल पञ्च गंर सिधुन पाण पूजा पंचगम वक्रु
आदि पूजा देव पूजा माहोनि साधन आदि काय मलु
विन खानतन गालकाय मलु ल विष्णु न गुन वीर

चर्चा पा किम्वद विषय नदिन मल्लान विष्णु सनातन ॥
धि उपाध्यान किन्नर पूजा कनर गंजनर पूजा गीत
रुन ॥ अंघि निष्ठा गीत नरु वंशु ॥ किन्नर ताव मलु
पूजा गीत ॥ पूर्वा देव पूजा धूप गीत नमस्क ॥ देव
चर्चा शिवक ॥ ॥ कूल देव लख सौ हय उपाध्याया
अनंतय ॥ अहाया चनास पंचगम तस्य अहया लिखि
उवकु पणु वीज मगवाय खजपणु संवाय योन

मन्त्रां वज्रवा नादीयां ध्वनिगुलिज्जुं ध्वनि ध्वन
ध्वजा रावना ॥ ध्वप निवांजन विधि ध्वजा ध्वन्या स
जाय सुरुननय अका नमूव दक्षिणा तयक ॥ ॥
मीचक सवन वज्रवा नाहिया निरुहया नूगन स
वीज तयगुनि धाल स खानन स रावना ॥ ध्वप निरु
जन गालचा मत रुं ताय विधि ध्वजा ज धम्मा मि
नमूव जथां स ध्वनि दक्षिणा तयक लपन उह

पंचवत्ततय ध्यादउान जनुनिगुनि निरुहया
दावक गय सुरुननय ॥ ॥ ध्वनि ध्यापानि निवा श
स हाध्वजा दक्षिणा तय ॥ महादान वा कया स अयकाय
जजमानन ध्यापानि लउा हाय ध्यापानिन देवया नूगन
स जनु मयागुनि धाल निवक धूनकाउा देउा याय
स तयाउा पति ध्यायत मानका धूनवकर्म या सुरुय
शिदिमा वगायतना कर्मयाय वाक पूजा ॥ ॥ ध्वनि

॥ ॥ दमपतिनय. न्वयानमान. दूनदवयाग. वनमान. ॥
हीय नित हाग एनन. एसक. वगुवि. दमपति ॥ दमाम.
दमपति. ध्रुवयानतयमान ॥ ॥ उंकीं नला कविजयेसखावीनया. ॥

हो ॥ उंकीं नला कविजयेसखावीनया. ॥
विलिखनूर. दूर. मूल. दूर. दूर. पद्म. दूर. स्वाहा ॥ सना. दून. यधमाल. यन.

स. च. न. द. ज. न. च. द. दूर. य. दूर. मि. पूर्वा. ग. व. ट. न. दूर. ॥ ॥
हा. ना. वा. धा. नि. द. उ. या. पु. ति. द. या. हा. ॥ अ. दूर. म. वि. का. द.
या. हा. सि. ना. दूर. दूर. धा. न. स. दूर. ॥ म. स. दूर. ॥ दूर. स. दूर. ॥ दूर. दूर. ॥
दूर. ॥ ग. म. दूर. ॥ आ. द. म. न. दूर. ॥ दूर. व. ग. दूर. ॥ पू. ना. धु. य. ॥ वा. दूर. स.
प. दूर. म. न. ॥ दूर. धु. दूर. दूर. दूर. प. दूर. मि. न्या. स. पि. का. या. न. उ. ॥
म. स. ज. न. या. ना. हा. का. या. उ. दूर. या. या. द. उ. ना. हा. नि. हा. उ. ॥
नि. उ. म. न. या. दूर. न. उ. ना. हा. ध. म. प. ना. या. उ. न्या. नू. हा. म. स.
॥ दूर. उ. ना. ध. या. कि. या. क. हा. गी. न्व. मू. उ. ना. या. द. उ. ॥ ना. ज. ॥

दिनजहूषतिष्ठा॥

हं नमः श्रीवज्रसत्वाय॥ दिनजहूषतिष्ठा विधिमाह॥ आदौ मधुला हि
सनविधि॥ ॥ यद्भवत्तुलंकाययत्॥ यच्चवीर्यादिविद्रुः॥ कृष्ण
वसुयत्॥ पूर्वनीलवज्रविश्ववज्र॥ दक्षिणवत्तुलंकाययत्॥ उत्तर
वविश्ववज्र॥ विदिगनाचनामामकिपातुलातथा॥ ततः कलमध्व
नयूजाविधिपूर्ववत्कानयत्॥ यच्चतज्जुष्टदलकमलायनि किन
जहूषयत्॥ पूषयागये॥ रावना॥ मटितिभूत्यातानकर्त्तुं नञातवति
भं॥ कृष्णः॥ विश्ववज्रस्ति॥ कृष्णकानकिनज॥ जहूलिवज्रविश्ववज्र

किनरावना

संवेकयथीरुतं वज्रया कानयत्॥ जहूलसंजात वितातमध्वयजम
संजाला विश्वकलिसमयीरुमीविताय॥ ॥ तन्मध्वमटितिबज्र
सत्वनूपासयनादृष्टतेलाकविजयायवनामा वज्रकृष्णकानाविश्वः
कुसुमसुशुभेनवकालिलीलायाः॥ लीटववज्रद्वयनातिक्रम्य कृष्ण
नूकल्याकनलच॥ जलमयी विश्वयः॥ कृष्णलयनिवनिवित्रजग
विश्ववृद्धाननीलपीतहवित॥ मूलसर्वतत्रवक्तृया॥ उक्ताकलाल
ललजिह्वः॥ यतिमुखं सक्तुर्मि॥ कूटिलवक्तृवर्तुन॥ गिनर्गय

कामखना ललाटस्य यश्च कपालगलावदनमुग्निलः ॥ १ ॥ नील
षट् ॥ ४ ॥ शुभमाला सुशोभायुवमन्त्रिनीलावकवलप्रिताह्वक
विलकुकलः ॥ ४ ॥ ककादिनागनाज कृत्ककुलावजयभाधनायावज
मूढिद्वयपुलनं कनिष्ठाद्वयपुखलितं तज्जनीद्वयप्रसितमिति ॥ १ ॥
लाकविजयामूडया स्वारयज्ञासमायर्न सयकनाया अकृमया रमेवा
माया कपालखद्वार्मदधना गजुगि कालः ॥ ४ ॥ मुखनदिगमुखः ॥ ४ ॥ खद्वगन
कूकावागप्रसितनस्मिदिः ॥ ४ ॥ दगदिमिध्वाना कषाकूकावा कूदिग

दगका ॥ ४ ॥ पूसमययत् ॥ ॥ आकषण पाद्यादि धूपतीला लोहा
गिनका ॥ ॥ स्नान यश्च मृत पूका चूर्णकृत नकचद दक्षिणकाशान
कादुस्नानगर्भयुजा ॥ ॥ पूषत्या म ॥ जाय ॥ मरु ॥ ३ ॥ आ ॥ ४ ॥ ॥ यधमा ॥ अ
कात्रमुख ॥ ॥ धनकित्रगगाय ॥ ॥ ३ ॥ यधघाटय २ सर्वदृष्टान कूह
दुसर्वदृष्ट्यादि ३ ॥ ० ॥ दादि सपनिवानान कीलय २ कूहदु ३ ॥ ० ॥ दाः
यस्त्राहा ॥ ॥ पू ॥ ३ ॥ य ॥ द ॥ अ ॥ ने ॥ वा ॥ ० ॥ ३ ॥ पूर्वस ॥ अ ॥ य
प्रिमधूतक ॥ ॥ य ॥ ॥ य ॥ द ॥ अ ॥ ने ॥ वा ॥ ० ॥ ३ ॥ पूर्वस ॥ अ ॥ य
प्रिमधूतक ॥ ॥ य ॥ ॥ य ॥ द ॥ अ ॥ ने ॥ वा ॥ ० ॥ ३ ॥ पूर्वस ॥ अ ॥ य

पूजा मधुलपूजा यनानंदवपूजा भादति साधन ॥ ॥ अंलि कलक
 बलं स्वसहयाउ जातकमादिकियायादह ॥ ॥ वलादेकागो दु
 मलकूक्यादता ॥ ॥ सगरादिकाका ॥ ॥ स्ववाअनऊरुयावि
 धि ॥ दसनकूऊरु मधुपस खउखियात यअसुगका कामानिहय
 कांदायकउ २१ खियातसद्या ॥ यखं पूर्वसवदशि ॥ ददि ॥ ॥ ददिनि
 सि ॥ यधिमउनगगशि ॥ ३ रुनस यिवागशि ॥ ३ लुगगहल कशिला
 क यठहन पुकापाठ जलालपठ दवदावूकया इखसपअदग

यतायद्या ॥ मधुलसमूलकवम पूर्ववानस जजआठन रक
 आठसार्चकर्मिक थअ २ दिगगदूयक ॥ कवमवा ॥ मरु ॥ ३ वज
 नदह ॥ धनंदूकीनगगन गुनमधुलादि दगुलि यथामजात थंधू
 नकाउ ॥ मधुलस सर्वकर्मिक कवमलंखनहाय ॥ रावना ॥ मदि
 तिगून्यतांनकरं नकाचकं विद्युकिननादि विधियनिकिलगहाय
 मधुलेख्य खनूपांनिनूय पादभादिकायाययामितां कामिहूपरां
 गधपूषांयूलाकला गस्यम ॥ ३ कानयत्य साधितवाअमूजा समा

यत्था तदशाद्य ह्यनमूजसमायत्था समुत्सलित क्वचन च नि समः
 नीत ह्यनचक्रं यथा विदित्वा न निवेद्य महाबागवत वीर्ययव
 जामागन निग्नय यथा ह्यनदवगात्रकात्मकं ह्यलित्वा यथा ह्यन
 समयचक्रं यविर्ह विचित्र ॥ ॥ आ ५ ॥ नी ॥ चक्रकायादिभूषिष्ठा
 न ॥ ख द्दीजमयूमा कृष्णतथागतदवीवहिरिषि ॥ स्नान ॥ य ॥ पूय
 न्याम ॥ ला ॥ य ॥ उ ॥ त ॥ जा ॥ य ॥ य ॥ य ॥ वलिविय ॥ उ ॥ डा ॥ दि ॥ व ॥ जी ॥ त्या ॥ गि ॥
 कव २ ॥ य ॥ ला ॥ य ॥ उ ॥ त ॥ त ॥ ता ॥ अ ॥ ज ॥ न ॥ सा ॥ घ ॥ न ॥ क ॥ रु ॥ या ॥ म ॥ रा ॥ व ॥ न ॥ ॥

महादेवस्वयं नमः ॥ ॐ ह्रीं क्लीं बुधं ह्रीं स्वाहा ॥ पञ्चम कृष्ण विष्णो
न ॥ दवादि दूषा विष्णो पूजा ॥ ॥ धनदम क्रिया जात कर्म नाम
कर्म हलपाम नगा ॥ स्नान गन ॥ दक्षिण पूजा ॥ सप्त गन य आ ॥ ॐ
ॐ ॥ ॥ सति अग्नि ह्यपन धनिगमाल ॥ ॐ नायकाय ॐ वाय
गुनमगुल लखवलिवियधूनकाउ गुनरु पलिलक मकूट वज्रघ
ॐ गुवापाग पूजा अंगुनि कूगुलादिल उक्ताचक पञ्चगव्य अक्षत
सिधवत सुमाधि ॥ कलंग न्याम धूनकाउ आकपोउ दिवनी सिजलः

स्वाला सुगयाउ। सुजनिमि मया नाउ। लंख संह गुनू हउ। नतथाउ।
 ॥ **स्नान** च्छालनस्यं रावना ॥ नीलाजन ॥ य (अश्रय) दाव ॥ आयदनाउ। स्वः
 सिवा कन मिजल स्वावातयं। होमया दातसु तय स्वावर्कं अग्निहोय
 नंपति च्छाहा ॥ होमरावना ॥ विधिथं अग्नाहति धूनकाउ ॥ कर्मवि
 र्ययविक्रमन द्वाय ॥ इहाउयाउ। कायसु दमका टवलिविज ॥ धनस्य
 काहति जाय जिधान धूं उनूं आयदनाउ। घृताहति स्वसिवा कन
 काहति पति च्छाहा ॥ ॥ धनकू नदवया क्रियाया ह ॥

नयन च्छा कर्तुता ॥ धनकर्मदार्शन दमवलि मिह जग न
 कं सिध द्वाय अलया लउ ज्ञान वलि मालायनय ॥ येश्र धाया ॥ न
 जायजा आचार्य कर्म जीउमान सकलसुखयात ॥ किंथ माला ॥
 धकादिमधुलधिले स्नानतन ॥ ममसि ध्यान य धो लयादि वदतुः
 विठजं धूं मत मधिउयधिल्ल दधुनादि धूं शस अद्वानतस्य ॥
 मगादन ॥ मधुल विसर्जनि गुनू पूजा सुधनतन दमवलि द्वाय
 ॥ ॥ यानन ॥ १ ॥ पथमदिन जरू अग्निहोयन धनदिनस ॥

॥ ॥ लाकारुद्र ॥ निम्नजं ह्रुं विहिउथं सकतां सः ॥ सउतः लि
० वासुगुनमगुल सिधुत ॥ आदि समय ॥ मगुलधिलं जूरुतः
मगुलविसर्जन ॥ वलिचुन ॥ नदिनमह्माव ॥ दगुनि करं मन्माहः
अग्निहोत्रं कुरु साधन दवपूजा माहनि साधन दवताकृति यंत्रः
मा ॥ लाकारुद्राकृति याय दिग्वलिविय यंत्रकुरुनाम ॥ आग्निनील
नं पूषमूजानतिनक वागम कुरुपताका नकमुख का वागम वि या
सगका ह्रुं विन ॥ यंत्रजाग्निनाम ॥ यंत्रपात्रह्रा ॥ नहुन सां सः

॥ गीतकाला ॥ धंलि पूषमूजानतिनक वागम कुरुपताका नकमुख का वागम वि या
मयतिला मर्न ॥ मगुलधिलं खानतन पूषमूजानतिनक वागम कुरुपताका नकमुख का वागम वि या
वृत्ति ॥ दक्षिण पंचयाग्निनीलहान वलिचुन कर्तव्य मुखसूत्र ॥ ॥
द्वितीयदिनजरु गुनमगुलादि दाम दवताकृति सदाकृति य
विक्रमथंशु नधूनहाता ॥ वतादम वतमाकृत समावर्तनताकिमा
दमवलि यंत्रधाम खानतन पूषमूजानतिनक वागम कुरुपताका नकमुख का वागम वि या
यावन ॥ ॥ ह्रुं कुरुयाथं धनदिनजरु स ॥ ॥ लाकारुद्र ॥ नि

कवचवज्रप्रतिविम्बवायवम् ॥ तथेव सत्त्वादि कंच कृत्वादि निः
 युतिमायविविधि ॥ गदकं प्रतिष्ठा ३ लोक ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ॥
 पंथममृत ॥ गिजस्त्रलासत ॥ मरु ॥ ॐ हूं गों कीं जूं ॥ यचरगमिज
 लसत ॥ मरु ॥ ॥ यचरवल्कन ॥ कंगस्त्रलासत ॥ मरु ॥ ॐ हूं गों
 थगत कायविष्मधनस्त्रादा ॥ ॥ नस्त्राकचिकित्ता ॥ मरु ॥ ॐ
 गों जूं खं ख ॥ ॥ जूडालवमगुडाथेव पीतकाष्ठमदननस्त्रा
 ॥ श्रीगंजनयुगमच्चुत्तालाजाकृतशवंधिनी ॥ ॥ यचरवल्कन

[illegible]

गीतिका
रावना॥

त्यथानामुखः ॥ गन्तः ॥ वैद्यकलमयीवा महता ॥ प्रतवासशी ॥ वरु
 यत्रिचसत्सुगं सुष्ठु क्व विधिका विधिका विद ॥ ॥ गीलक्रिहाव
 ॥ आदवीयमाहिता नीवात्यवसुनिता सिद्धयमरुकाय काकिशोरन
 संहिता ॥ लक्मिनीयमायनहिता ॥ पुष्टसुष्टिकसंनिता ॥ अरुदध्यनरु
 लाव ॥ वनधन्यववपुदा ॥ सर्वरुतां गीलक्रिंशावयन् ॥ आ ॥ पा ॥ धू ॥ पूजा
 ॥ आ ॥ गाम ॥ ॐ जां गीथनम ॥ स्वाहा ॥ ॐ जां जी लक्रियनम ॥ स्वाहा ॥
 ॥ मुनि ॥ ॐ गीलक्रीमहादवीव ॥ सर्वसंपत्तिदायकी ॥ सर्वकामसुद

三

[illegible]

गोशकधु॥

दुयमलदविशयधीश्वरुचननमिदकं वनामधुयवकं वनादिय
॥ १ ॥ नादत्र वाथनेकधुवाकीया ॥ ७ ॥ धनयुवाकन
न ॥ यत्नामलकमलयाधिसवदकीधुं वकायुधयवत्रासि
स्यलाक ॥ लाकधुत्रस्यसुगमस्यसुखात्मकस्य नत्माकलंरुवकु
वमारिधकेः ॥ १ ॥ कावधसुवधुवकं वकायुधयवत्रासि
वमासिवाचक ॥ ६ ॥ सवित्रवधविधधनसवहानवालान् वदय

राकुरुनि॥

हंखाहा ॥ ६ ॥ धर्मोदावधिकवधेखाहा ॥ लमवधकासमहाकावय
वक ॥ रुवस्मान ॥ यत्नामलसलुगस्यजिनयकेन सलुनावम
हमाससरासिनल ॥ धीवलसंरुवजिनस्यविनविनस्य नत्माक
रुवकुनंयवमारिधकेः ॥ १ ॥ नालवामकरुननाचक ॥ रुलकु
नदावायाकावमाय ॥ ६ ॥ निलकरुयधेखाहा ॥ वननमिद
सनीरुवधरुयधेखाहा ॥ नानारुवधकाकावय ॥ वाकुरुनि

१०० दिवस का शुभ

[illegible]

२३ ग ५५॥

यनहिल्लानन वृद्धत्वसमुद्योगक वा आर्याविहाययम् ॥ धनसुख
मविय ॥ उं वृद्धधर्मकीः ॥ मंगलाकायवविय ॥ उं वृद्धधर्मविय ॥
॥ कर्मिणामविय ॥ उं वृद्धवत्तु ॥ लीलि कृत्ति कृत्ति या आहायक
धनयवायदावयुजा ॥ धनादव ॥ ॐ निवनादधिविधिः ॥
धनलीहाविद्यायकयान ॥ यथादिनमधुल ॥ धनवक ॥ खानवायक ॥
वयाकयुजायावक ॥ धनहाहावययक ॥ नय ॥ सवन्तथागला ॥ निम

२४ ग ५५॥

दिका ॥ निस्वराव वाधिवरु नूया विहाययम् ॥ यथा ॥ यथा ॥ यथा ॥
॥ वाधिसत्ता ॥ वासर्व ॥ वृद्धास्त्यधमनामना ॥ वाधिसत्तामहासत्ता ॥
महिआष्ट ॥ जनिनः ॥ निस्वरावनीलालर्व ॥ सर्वसत्त्वक कावर्ध ॥ नयमास
महाहान ॥ वाधिविरुमिमिम्भर्न ॥ दवदम्भनवलीहाविद्याककाव
य ॥ सविलकोका क ॥ यवायदावयुजा ॥ धनादव ॥ नय ॥ ॐ निवना
नमादवसमावरुनविधिः ॥ ७ ॥ यत्रियानिनयुजायावक ॥

२५ निरुद्धको ॥ ४॥

रुदिका कायक ॥ श्वाननन ॥ समननयक दक्ष ॥ आशीर्वाद ॥ सि
मदसवादन सिंधुननयक ॥ समय ॥ बलि कायमनन ॥ समयायक
वकनकाय ॥ ७ ॥ धनदुसदक कया कीया ॥ ८ ॥ ९ ॥
धुल ॥ १० ॥ सनिक कहावा बलिनिविहा कयाय ॥ बलि काय
॥ धन अग्निक ॥ ११ ॥ नायकाव वाकलहा आदिन दहावलि विधानन
कथायनाया ॥ १२ ॥ वाय गुनमधुल यशगवा सिंधुनयक ॥ १३ ॥

आगमन ॥ १४ ॥ नमनका ॥ १५ ॥

बलि काय ॥ विसमाधि ॥ कृष्णधिवसन ॥ अग्निकायन ॥ अग्निक ॥ दव
मधुल यका दवना कनि ॥ चवका थय ॥ १६ ॥ धन सिंधुवनास ॥
रुदिका याक सद ॥ श्वानन ॥ लालनय ॥ लावना ॥ नमः स्वददय वयसु
आः कार विना याः यमिमादि दवनाम दात्मिका वयसनिथा यः स्वद
दयाद लुका यमिमाद वाः वामया ॥ १७ ॥ यशवनासन निषय ॥ १८ ॥
सत्व आः ॥ १९ ॥ थकाठिन वाहा ननधियक ॥ नीला ॥ २० ॥ माल वागन

ॐ ॥ धन लब्ध कश्चिन्ननद वया गत्र स को स्वाय क ॥ लिमिदाय यवा
 कृच्छ्रिन्मया व का व व क न न या न दी ग ना या व द व ना य
 यदन मा स क व क ॥ सा क्का य डं स व क था ग न का य वि ॥ धन मा ल
 ॥ धन लब्ध व द न द व या न सि द द्वा रा व या य ॥ को उ व क न न द
 व या क व य का रा व या र्थि द्वा स क न स न य ॥ धन य व व ल्क य वानु म
 र्थि व ग न्थ य व ग व न र्थि ज्ञान ॥ य द्वा ला व व मा ल्क र गी ग न्

+

यत्पृथु य व न दी य वि वि न ग न्थे ॥ पू जालि न य नि र म दि व म र्थि
 ने स ल्क क ल र व लु न य व मा लि व क ॥ धन सि धू नी य मा सि वि य
 डं दि द्वा रा म स स्वा हा ॥ डं स व ल र व ल र्थ य (१) स्वा हा ॥ ना ना आ र व ल
 वि य ॥ धन सि धू न क्का य ॥ मा उ कि नी न मा उ म य व क न य ॥ ल्द न
 ल व व द्वा ना ने धा लु क न म ल्क न ॥ य आ र्थि य उ ना थ य म क ट य श क
 ला रु व ॥ डं व द्वा स ल्क ॥ धन र्थि दि कान का स्वाय क ॥ डं जू जू आ उ न

सुखा दृष्टिमानानुवर्जनसूयं गच्छिमाणाविलं विनस्तु चक्रुः
हा वानालवामन रुनावक वा ० ॥ धनसमावस जनाप्रयन बाल
लक्ष्मियामनस्य बालसखाननस्य कावना बाधुननाकवधुशिव वा
धिविलस्यवृयकावयन वाननाददयस्तुः वीजादव नानालोकवातु
लित्वा अकनिष्ठयुवनमिता धीरुलवीर्षविनयन वानीलाहसन वा
मसिधस्मान्मयूजा वधन लाहामस स्वस्ति कयास्य जलाप्रयनस्य

वस्य स्वतुष्टि यामनवय वामथाथ ॥ वृथना धमगिनिमदा हानालोक
यराकनी वृहीत्वायाहिनायाहि वृद्धकृत्ययवर्तन वधनसखनम
न यहायायात्ममधुर्ल वनसखनमनाथ कामाखियत्रियुत्रय ॥ ० ॥ ध
नवयवक लक्ष्मिधनयस्य नाउवानसावरा यहुमधुलदयक ॥ न
यवानस वीहानकान स्वस्ति कसनस्य अनीलिननाय ॥ ईसवव
मलिमहावजाष्ठीयवधुमिष्ट रुद्रुहाहा वाजावहासाननाय व

दासमनुष्म वै स्याद्वा ॥ कालवा सनरु सखनन नाय ॥ नैवाक ०० यः
गमी ॥ स्ववाक सखिवाक यत्रय ॥ थवथासमिथान् द्यालस वै ॥
स्वकुलयावगर्थः यत्रमिथानरुन ॥ ० ॥ थनवद्यावनरुचक ॥ वनका
द्याय ॥ वैदिशान्नन ध्यानसमाधिध्यानधीननस्याहा ॥ यैवायकावपूजा ॥
लादी ॥ नर्थन ॥ ०० नियागिग्रह ॥ नदिषीशविधिः ॥ ०००
थन ॥ यकाशिरावना ॥ अमिक ॥ सुसखान ॥ कालनरु ॥ रावना ॥ ०००

५२

दिग्गमिद्विः वृद्धविदं वृद्धविमि लं दृष्ट्वा ॥ आयादि सधमन्त सधम
 आदिन मित्रधित्रीदीदाय ॥ उं दृष्ट्वा आयादि सधमन्त सधम
 दिविद्य ॥ यं ला र्यं मुं दृष्ट्वा आयादि सधमन्त सधम
 ॥ धनमधुलसखाननस्य सावना ॥ ननः सधमन्त सधम
 यल्लिखित्वा अफनिष्ट सुवनगत्वा ॥ ननः सधमन्त सधम
 धुल्लं दृष्ट्वा ॥ आयादि नीलादिन ॥ यथादि यथा ॥ उं दृष्ट्वा सधमन्त सधम

ॐ श्री खै वी नमः ॥ २

सर्वगुण
सर्वभूति

॥ मधुलसदंदावरात्रयं च काठिहा जात्रयं चाने ॥ यद्येवम
कौं ॐ सर्वमिष्टमगमय जायस्मानाय ॥ आत्मानं निश्चिन्तयामि पुंसां काल
य ॥ वृद्धानां मरिचिकं कुरु ॥ अगस्त्याय वक्षि ॥ गुणाकं नमः ॥ यद्येवम
मथाददध्वं मर्यादि ॥ ॐ निमलं लयवशा विधिः ॥ ७ ॥ यद्येवम
निष्ठा रात्रना ॥ सहस्री जमयुवांसां जात्र ॥ यद्येवम ॥ विष्ठादयसाग
गगलमायनिर्गहृष्टा ॥ स्नानयात्र ॥ यद्येवम ॥ देवकं यत्र नमः

वक्षतल
वक्षतल ॥

यामिष्टमगमय ॥ २

युध्यकी याकनममाथेनारिश्च ॥ कस्तूरिजमदकमकांशनिष्ठा
हं नत्मीगल्लरुवरुनयत्रमारिचिक ॥ यद्येवम ॥ यद्येवम ॥ यद्येवम
वक्षोदकारिचिश्चरुं ॥ यद्येवम ॥ यद्येवम ॥ यद्येवम ॥ यद्येवम
७ ॥ यद्येवम ॥ यद्येवम ॥ यद्येवम ॥ यद्येवम ॥ यद्येवम
महामह ॥ ममायिगल्लनाथय ॥ स्ववक्षायददादिम ॥ रात्रना ॥ यद्येवम
मरुवत्रयिर्न ॥ स्नानसत्त्वमकीरुर्ननरुर्न ॥ यद्येवम ॥ यद्येवम

विष्णुश्च मानं वृषवजादिभिः वृष्टमानं मङ्गलगीर्गलावयन वासा
य ॥ यत्किमर्गलं हि न कर्तव्यं न मयि विदुः पृथक्कीया कवच मायुजगाम
यत्किं कृत्स्नं जगत्कुरुगवान्मनिष्ठाकृतिर्हि मत्तङ्गलं रुद्ररुद्रं यत्र म
रुद्रकः ॥ यथा हि जा ॥ न तस्मिन् रुद्रयिर्न तस्मिन् रुद्राय न तस्मिन् रुद्राय
कं वा याति न सावकं ॥ उक्त्वा जगत्तद्वन्नीजं विष्णुश्च हं वा उक्त्वा तद्विष्णु
रुद्रिष्णुश्च हं वा उक्त्वा तद्विष्णुश्च हं वा उक्त्वा तद्विष्णुश्च हं वा उक्त्वा तद्विष्णुश्च हं

[illegible]

ॐ वज्राधियमिहामरिषिश्चमि निष्ठवज्रसमस्तं वज्रघण्टा
गृहीतमिमं यारुगवनमयि सन्निहिता रुद्रः ॥ घण्टाधिय ॥ घण्टा
धकः ॥ ७ ॥ वज्रसत्त्वहामरिषिश्चमि वज्रनामा र्षि वज्रः ॐ वज्र
अमकवज्रनामनथागनत्तु रुद्रः ॥ वजननवक ॥ नामारि अ
॥ ७ ॥ यानिमादिदवनां सवज्रवज्रघण्टा लक्षणं कानमृदाया
ननालिनयविश्रायः ॥ ननः सुयविशिष्टवज्रखाहा ॥ लवजनन

॥ आवायालिषकः ॥ ७ ॥ नदन्वकपायुक्तवज्रसत्त्वः
कीनघन सविद्यवैवाचनादि नथागनत्तु वज्रनामादिदवनां
दवीरुर्न महासुखमनरुर्न वज्रयनाया ॐ वज्र वाधिविरुद्र
निमादवनायामरिषिश्चमि वजनयन ॥ वज्रा लिषकः ॥ ७ ॥ नन
रुनवज्रसत्त्वनायनी नदद्याः समायनाया यनिमादिदवनाया सवज्र
नदमयत्तमधिमुत्थन ॥ यहाहा नालिषकः ॥ ७ ॥ नदन्वक

